



DR. KUSHAL KONWAR SARMA

Dr. Kushal Konwar Sarma is Professor & Head, Department of Surgery & Radiology, College of Veterinary Science, Assam Agricultural University (AAU), Guwahati, Assam. Dr. Sarma is widely recognized as the "Elephant Man of Asia" and is globally known for his work in the field of wild life health care, management and conservation. The service rendered by him in this field has saved the lives of thousands of wild animals globally. His relentless efforts have led to a notable change in the perspective towards wild animal healthcare and conservation in India, particularly in the survival and welfare of Asian Elephants and One-horned Rhinoceros, which has also been recognized globally.

2. Born on 1st March, 1961 in a remote village of lower Assam, Dr. Sarma completed his schooling securing a National Scholarship, graduated from the College of Veterinary Science, AAU, in 1984. He completed his master's degree in Veterinary Surgery & Radiology in 1987 and PhD in the same field in 1994 as an in-service candidate. He joined the AAU in 1987 as an Assistant professor and promoted to Professor in the Surgery & Radiology Department in 2006 and has been the Head of his department from 2012. Dr. Sarma has authored over 150 research papers in National and International scientific journals, authored 6 books, co-authored or contributed chapters in 7 books, guided 45 students in PhD & MVSc in Veterinary Science and published over 100 popular articles in various English or vernacular journals. He is member of the Editorial Board of one International (Chiang Mai University, Thailand) and two highly-rated National journals. Dr. Sarma has completed two research projects as Principal Investigator and two as co-investigator. His work with lIT Guwahati on "Electrospun silk polyaniline conduits for functional nerve regeneration in rat sciatic nerve injury model" received critical acclamations in medicine.

3. Dr. Sarma has travelled extensively, served one month in Indonesia as International Elephant Expert and is a guest faculty of the North Carolina State University and New Mexico University in USA. He had led the Rhino translocation programme in Chitwan National Park in Nepal. He has organized several National and international seminars, conferences and training programmes as the Course Director or Organizing Secretary.

4. Besides his call of duty as a university professor and administrator, Dr. Sarma has dedicated his life to the healthcare and welfare of wild animals in general, elephants and rhinos in particular. He has not enjoyed a single holiday or weekend for personal comfort or pleasure for over three decades, running from forest to forest, at the service of wildlife. He attends over 700 elephants annually for preemptive and on-call basis, which now includes besides Assam, other Indian reserves like Dudhwa (UP), Rajaji (Uttarakhand), Jaldapara (West Bengal), Kanha, Palma (MP) etc. He has the distinction of subjugating a record 139 rogue elephants in the jungles of north eastern region of India. He is the spearhead of the Veterinary team with the target of leading the world famous Manas National Park on the path of revival by reintroduction of the One-horned Rhinoceros. Besides rescue, treatment and translocation of many wild elephants, Dr. Sarnia provides parallel services to Rhinos, Swamp deer, Tigers, Leopards, Bear, Bison, and Wild Buffaloes etc. all over India.

5. Dr. Sarma is a member of the Steering Committee and Captive Elephant Healthcare and Welfare Committee of Project Elephant, Govt. of India; Zoo and Circus Elephant evaluation committee, Central Zoo Authority; Assam and Tripura State Board of Wildlife etc. He is the serving Chairman of the BlueCross Society, Assam and has also served as the Vice President of Indian Society for Veterinary Surgery. He is presently the member of Asian Elephant Specialist Group, IUCN, and EEHV Asia Working Group.

6. Gold Medalist of 1984 batch of Veterinary Graduates of AAU, Dr. Sarma has bagged many National and International awards/recognitions. He received prestigious Dr. S. J. Anjelo Gold Medal from the Indian Veterinary Association (1997). He was conferred 'Award of Excellence' by the Chief Minister, Assam in recognition of outstanding contribution for rescuing stray rhinos from human dominated landscape (2012). He was conferred the prestigious 'Fellow' of Indian Society for Veterinary Surgery (2012) and Indian Society of Animal Production and Management (2020). Dr. Sarma has received `Certificate of Recognition for commitment to Asian elephant Conservation, Health and Welfare' by North Carolina State University in USA (2014). Prof. Jagdish Mukhi, Hon'ble Governor of Assam had presented Dr. Sarma with the 'Award of Excellence' and honoured him with the title, "Elephant Man of Asia" (2018).





डॉ. कुशल कोनवार शरमा

डॉ. कुशल कोनवार शरमा असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी (एएयू), गुवाहाटी,असम के कॉलेज ऑफ वेटरनरी साइंस के सर्जरी और रेडियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष हैं। डॉ. शरमा "एलिफेंट मैन ऑफ एशिया" के रूप में सुविख्यात हैं और उन्हें विश्व स्तर पर वन्य जीवों के स्वास्थ्य, प्रबंधन और संरक्षण के क्षेत्र में अपने काम के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र में उनके सेवा कार्य ने विश्व स्तर पर हजारों वन्य प्राणियों की जान बचाई है। उनके अथक प्रयासों से भारत में, विशेष रूप से एशियाई हाथियों और एक सींग वाले गैंडों के अस्तित्व और कल्याण के प्रति दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है, और इस परिवर्तन को विश्व स्तर पर भी पहचान मिली है।

2. निचले असम के एक सुदूर गांव में 1 मार्च,1961 को जन्मे डॉ. शरमा ने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर राष्ट्रीय छात्रवृत्ति हासिल की। उन्होंने 1984 में कॉलेज ऑफ वेटरनरी साइंस, असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 1987 में वेटरनरी सर्जरी एंड रेडियोलॉजी में अपनी मास्टर डिग्री और 1994 में सेवारत रहते हुए इसी विषय में पीएच.डी पूरी की। वह 1987 में असम एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी में एक सहायक प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हुए तथा 2006 में सर्जरी और रेडियोलॉजी विभाग में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत हुए और 2012 से अपने इसी विभाग के प्रमुख रहे हैं। डॉ. शरमा ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिकाओं में 150 से अधिक शोध पत्र लिखे हैं, वह 6 पुस्तकों के लेखक, 7 पुस्तकों के सह–लेखक या अध्याय लेखक रहे हैं, पशु चिकित्सा विज्ञान में पीएच.डी और एमवीएससी में 45 छात्रों का मार्गदर्शन किया है और विभिन्न अंग्रेजी और स्थानीय भाषाओं के जर्नलों में 100 से अधिक लोकप्रिय लेख प्रकाशित किए हैं। वह एक अंतरराष्ट्रीय (चियांग माई विश्वविद्यालय, थाईलैंड) और दो उच्च स्तरीय राष्ट्रीय जर्नल के संपादकीय बोर्ड के सदस्य हैं। डॉ. शरमा ने प्रधान अन्वेषक के रूप में दो और सह अन्वेषक के रूप में दो अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की हैं। "इलेक्ट्रोस्पन सिल्क पॉलीएनीलाइन कंड्यूट्स फॉर फंक्शनल नर्व रिजनरेशन इन रैट साइटिक नर्व इंजरी मॉडल" पर आईआईटी गुवाहाटी के साथ उनके कार्य को चिकित्सा जगत में अत्यंत सराहना प्राप्त हुई है।

3. डॉ. शरमा ने बहुत यात्राएं की हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय हाथी विशेषज्ञ के रूप में इंडोनेशिया में एक महीने की सेवा की है और वह संयुक्त राज्य अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी और न्यू मेक्सिको यूनिवर्सिटी के एक गेस्ट फैकल्टी हैं। उन्होंने नेपाल के चितवन नेशनल पार्क में गैंडे के स्थानांतरण कार्यक्रम का नेतृत्व किया था। उन्होंने पाठ्यक्रम निदेशक या आयोजन सचिव के रूप में, अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों, सम्मेलनों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

4. एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और प्रशासक के रूप में कर्तव्य का निवर्हन करने के अलावा, डॉ. शरमा ने सामान्य रूप से जंगली जानवरों और विशेष रूप से हाथियों और गैंडों की स्वास्थ्य देखभाल और कल्याण के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दिया है। उन्होंने तीन दशक से अधिक समय तक व्यक्तिगत आराम या खुशी के लिए एक भी छुट्टी नहीं ली है और वह वन्य जीवों की सेवा के लिए हमेशा जंगल–जंगल दौड़ते रहते हैं। वह अपने आप भी और बुलाए जाने पर सालाना 700 से अधिक हाथियों के स्वास्थ्य की जांच करते हैं, जिसमें अब असम के अलावा दुधवा (उत्तर प्रदेश), राजाजी (उत्तराखंड), जलदापाड़ा (पश्चिम बंगाल), कान्हा, पाल्मा (मध्य प्रदेश) आदि जैसे अन्य भारतीय वन्य उद्यान शामिल हैं। उन्हें भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के जंगलों में रिकॉर्ड 139 उपद्रवी हाथियों को नियंत्रण करने का गौरव प्राप्त है। विश्व प्रसिद्ध मानस राष्ट्रीय उद्यान में एक बार फिर से एक सींग वाले गैंडे की उपस्थिति को बढ़ाने के लक्ष्य वाली पशु चिकित्सा टीम की अगुआई कर रहे हैं। कई जंगली हाथियों के बचाव, उपचार और स्थानांतरण के अलावा, डॉ. शरमा पूरे भारत में गैंडों, स्वैम्प हिरण, बाघ, तेंदुए, भालू, बाइसन और जंगली भैंसों आदि के लिए भी सेवाएं प्रदान करते हैं।

5. डॉ. शरमा भारत सरकार की हाथी परियोजना की संचालन समिति और कैप्टिव एलिफेंट हेल्थकेयर एंड वेलफेयर कमेटी; जू एंड सर्कस ऐलीफैंट कमेटी, केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण; असम और त्रिपुरा राज्य वन्यजीव बोर्ड आदि के सदस्य हैं। वह ब्लूक्रॉस सोसायटी, असम के सेवारत अध्यक्ष हैं और इंडियन सोसायटी फॉर वेटरनरी सर्जरी के उपाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है। फिलहाल, वह एशियन ऐलीफैंट स्पेशलिस्ट ग्रुप, आईयूसीएन और ईईएचवी एशिया वर्किंग ग्रुप के सदस्य हैं।

6. एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के पशु चिकित्सा स्नातकों के 1984 बैच के स्वर्ण पदक विजेता डॉ. शरमा ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार/सम्मान प्राप्त किए हैं। उन्हें भारतीय पशु चिकित्सा संघ से प्रतिष्ठित डॉ. एसजे अंजेलो स्वर्ण पदक (1997) मिला। उन्हें मानव बहुल क्षेत्रो से आवारा गैंडों को बचाने के लिए किए गए उत्कृष्ट योगदान के सम्मानस्वरूप असम के मुख्यमंत्री द्वारा उत्कृष्टता पुरस्कार (2012) प्रदान किया गया था। उन्हें इंडियन सोसायटी फॉर वेटरनरी सर्जरी (2012) और इंडियन सोसाइटी ऑफ एनिमल प्रोडक्शन एंड मैनेजमेंट (2020) के प्रतिष्ठित 'फेलो' से सम्मानित किया गया। डॉ. शरमा को संयुक्त राज्य अमेरिका की नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा एशियाई हाथी संरक्षण, स्वास्थ्य और कल्याण प्रतिबद्धता के लिए सम्मान प्रमाणपत्र (2014) प्राप्त हुआ है। असम के माननीय राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी ने डॉ. शरमा को 'उत्कृष्टता पुरस्कार' प्रदान किया और उन्हें 'एलिफेंट मैन ऑफ एशिया' (2018)उपाधि से सम्मानित किया था।